Issue: 146
01 Sept. 2020

जैनाचार

www.jainachar.com Daily

Editor: Mamta Anil Gandhi - Mumbai 9619160611 / 9323804751

tgk¡ u jg lidYi fodYi] ogh g vkfdpU; èke

Hkkjr xkSjo vkpk;Z Jh iqyd lkxj egkjkt

मैं और मेरे पन को त्यागों, तभी आत्मस्वरूप को जान पाओगे'
'धर्म कहता है– अधिकारों की बात नहीं, कतव्यों का निर्वाह करो'
'तुम्हारा सोचा कभी न होय, कर्म करे सो होय'
'भावना ऐसी हो–गुणीजनों को देख हृदय में प्रेम के भाव उमड़ जावे'

जीवन में सन्यास आ जाये और उस सन्यास का भी अहंकार हो जाये तो मेरे भगवान महावीर कहते हैं कि ऐसा सन्यास तुम्हारे आत्मकल्याण में कभी सार्थक नहीं होगा। जहां संकल्प विकल्प न रहे वही तो आकिंचन्य धर्म होता है। लोग सब कुछ पा लेते है और सब कुछ पाने के अहंकार की चादर भी ओढ़ लेते है। अहंकार से भर जाते है, तो वह सब कुछ पाकर भी खाली हाथ ही रहता है। मै पूछता हूं कि किस बात का अहंकार करता है आदमी, क्या लेकर आया था, और क्या लेकर जायेगा, मेरे भाई जो पाया है इस संसार से मिला है, और जो त्यागा है वह स्वयं के के हित के लिए त्यागा है। मैं और मेरे पन का भाव जब तक अंतरंग में रहेगा तब तक तुम्हें आत्म स्वरूप को नहीं पहचान सकते और बिना आत्मा के स्वरूप को पहचाने कैसे होगा आत्मा का कल्याण। जैन दर्शन कहता है कि साधना बाहर की होती है तो कभी–कभी व्यक्ति अंहकार के भाव से भर जाता है लेकिन जब अंतरंग में उतरना है तो भावों में किंचित भी मैं और मेरा पन का भाव न आये। 'कभी कभी जोड़ने से ज्यादा छोड़ने का अहंकार ही तुम्हारी नैया डुबा देता है' जोड़ने वाले से अधिक छोड़ने वाले को अहंकार हो जाता है। मैं त्यागी हूँ, मै संत हूं, मैं सन्यासी हूं, मुझसे बड़ा त्यागी दुनिया में कोई और नहीं। अरे जब त्याग ही कर रहे हो तो अहंकार में क्यो अकड़ जाते हो। भगवान महावीर ने सब कुछ छोड़ा और कहा कि मेरा था ही क्या जो मैं छोडूंगां। मन से अहंकार का भाव निकालो, नहीं तो जीवन की नैया डूब जायेगी।

'कौन किसका पालनहार है– तुम क्या यह सोचते हो कि तुम किसी को पाल रहे हो, यह दुनिया, यह समाज, यह घर तुम्हारे ही बलबूते पर चल रहा है। मिटा दो यह गलत धारणा! यह दुनिया है कल भी चलती थी और जब तुम नहीं रहोगे तब भी चलेगी। जो जीव इस दुनिया में आता है वह अपना पुण्य लेकर आता है, तुम किसी को क्या पालोगे। एक छिपकली सोचती है कि यह मैं न रहू तो यह छत गिर जायेगी, इस तरह की सोच मे जीवन मत जीओ।

'सुख दुख में रहे समत्व भाव'– धर्म हमें सिखाता है कि चाहे सुख आये या दुख, हमेशा समत्व भावों में जीवन जीओ। चाहे महल मिले या जंगल, जीवन एक सा जीओ। आत्मा एकल, एकान्त, अनन्य और स्वतंत्र है यह सोचकर करो साधना। जब तक जीवन से अहम का भाव रहेगा तो तुम्हारा पूजा पाठ, तप, साधना सब व्यर्थ है। भावों से होती है भव–भव की यात्रा'–अपने भावों को शुद्ध रखों। यह भाव ही भव–भव की यात्रा करवाते हैं। भावों से भव सुधरता है, और भावों से ही भव बिगड़ता है। समस्त प्राणी के प्रति दया के भाव रखो। दूसरों का बुरा सोचने वालो, उसका बुरा हो न हो तुम्हारा तो बुरा होगा ही'– किसी से सोचने से किसी का बुरा नहीं होता, यदि बुरा होगा तो उसका स्वयं का कर्म के उदय से होगा। जो लोग दूसरों का बुरा सोचते है, वह किसी का बुरा करें या न करें लेकिन पाप कर्म का बन्धकर स्वयं का बुरा अवश्य करते हैं।

तपस्या करने वाले सभी तपस्वीयों की सुख साता पूछते हुए खुब खूब अनुमोदना

सभी तपस्वी करने वाले से हम अनुमोदना करते है की आपकी फोटो जैनाचार मे प्रसिद्ध करने के लिये भेज सकते है

9323804751 / 9619160611, Email: aniljainam@gmail.com